४७. चमसपात्र

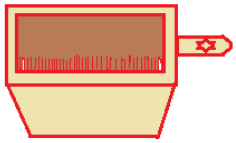

४७ **चमसपात्र**- ये यज्ञपात्र विकङ्कत काष्ठ के बने होते हैं। इनका आकार और मान पणीता सदृश है। इनमें सोमरस रखकर आहुति दी जाती है। ये संख्या में दस होते हैं। प्रत्येक को एक दूसरे से अलग जानने के लिए इसके दण्ड में अलग-अलग चिह्न होते हैं।

४८ मण्डल-होतृचमस

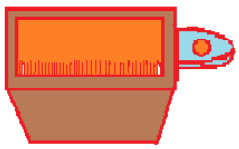

४८ **मण्डलहोतृचमस**- होता नामक ऋत्विज के लिए जो चमस होता है, उसे होतृचमस कहते हैं। पहचान के लिए इसके दण्ड पर मण्डलाकार चिह्न होता है। "होतुर्मण्डल एव चमस स्यात्।"

४९ चतुरस्र-ब्रह्मचमस

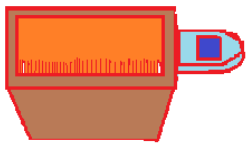

४९ **चतुरस्र-ब्रह्मचमस**- ब्रह्मा नामक ऋत्विज के लिए जो चमस होता है, उसे ब्रह्मचमस कहते हैं। पहचान के लिए इसके दण्ड पर **चतुरस** चिह्न होता है।

५० त्र्यस्रि-उद्गातृचमस

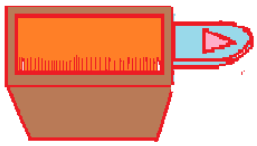

५० **त्र्यस्रि-उद्गातृचमस**- उद्गाता संज्ञक ऋत्विज का सोमरस भरने के लिए जो चमस होता है, उसे उद्गातृ चमस कहते हैं। पहचान के लिए इसके दण्ड पर त्र्यस्रि (त्रिकोण) चिह्न होता है।

५१ पृथु-यजमानचमस

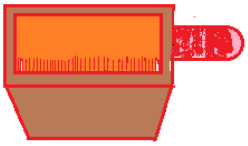

५१ **पृथु-यजमानचमस**- यजमान के लिए जो चमस होता है,उसे यजमान चमस कहते हैं। पहचान के लिए इसका दण्ड पृथु (विस्तृत / **चौड़ा** होता है।

५२ अवतष्ट-प्रशास्तृचमस

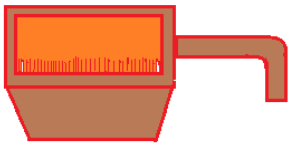

५२ **अवतष्ट-प्रशास्तृचमस**- प्रशास्ता नामक ऋत्विज के लिए जो चमस होता है, उसे प्रशास्तृ चमस कहते हैं। पहचान के लिए इसका दण्ड नीचे की ओर झुका रहता है।

५३ उत्तष्ट-ब्राह्मणाच्छंसिचमस

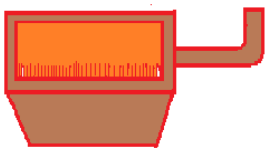

५३ **उत्तष्ट-ब्राह्मणाच्छंसिचमस**- यह ब्राह्मणाच्छंसि नामक ऋत्विज का चमस है। इसकी पहचान यह है कि इसका दण्ड ऊपर की ओर मुड़ा रहता है।

५४ विशाखी-पोतृचमस

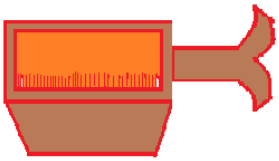

५४ **विशाखी-पोतृचमस**- यह पोता नामक ऋत्विज का चमस है। इसका दण्ड द्विमुख जैसा होता है। इस द्विमुख की आकृति को विशाख कहा गया है। इसी विशाखी का रूपान्तर वैशाखी भी है, जिसका उपयोग एक पैरवाले लोग करते हैं।

५५ द्विगृहीतक-नेष्टृचमस

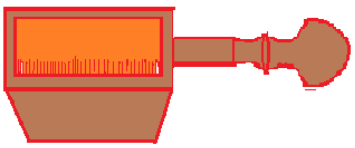

५५ **द्विगृहीतक-नेष्टृचमस**- यह पात्र नेष्टा नामक ऋत्विज का चमस पात्र है। इसके दण्ड में पकड़ने के लिए दो तरह की आकृति बनी होती है।